विचार बिन्दु

मानव का मानव होना ही उसकी जीत है, दानव होना हार है,
और महामानव होना चमत्कार है। –डॉ. राधाकृष्णन

राज बदलग्यो म्हाने कांई

राजस्थान के जाने-माने कवि गणेशीलाल 'उस्ताद' की एक कविता कभी बहुत गाई जाती थी। वह थी 'इण दिस सुख री पड़ी न झांई, राज बदलग्यो म्हाने कांई।' यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी जब वह कवि उसे आधी सदी से भी पहले सुनाया करता था। पिछले ढाई दशक से तो इस प्रदेश में प्रत्येक पांच साल बाद राज बदलता रहा है। पिछले दिसंबर में हुए विधानसभा चुनावों के बाद अब फिर नई सरकार सचिवालय में काबिज है। पर क्या बदला है? सरकार चलाने वाले राजनेता बदल गए हैं। अनेक जन-प्रतिनिधि बदल गये हैं। नया निज़ाम है तो सचिवालय तथा अन्य सरकारी दफ्तरों के कमरों में कुछ अफसरों की अदलाबदली हो गई है। मंत्रियों के यहां लगने वाली भीड़ में नये चेहरे भी नज़र आने लगे हैं। लंबे समय से बार-बार ऐसे बदलाव देखते आये लोग अब भी पूछ रहे हैं कि, राज बदलग्यो म्हाने कांई! जनता को राहतें देने वाले नारे नही बदले हैं। प्रचार-प्रसार के तौर-तरीके भी नहीं बदले हैं। पहले की तरह ही सड़कों पर सरकार के विज्ञापन करते पोस्टर और होर्डिंग बदस्तूर लगे हैं। अन्य प्रचार माध्यमों में भी नई सरकार अपनी पीठ उसी प्रकार खुद ही ठोकती उपस्थित है जैसे पिछली साकार थी। प्रचार में सिर्फ मुख्यमंत्री की तस्वीर बदली है। प्रचार-प्रसार के वही टोटके जारी हैं जो निर्वाचित नेताओं को आमजन से दूर करते हैं और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में भटकाए रखते हैं। जनसंचार माध्यमों के अध्ययन बार-बार यही दोहराते रहे हैं कि बड़े-बड़े दावे करने वाले अति प्रचार से लक्षित समूह में अरुचि पैदा होती है क्योंकि उससे लोगों में यह धारणा पनपती है कि सरकार ज़मीन पर कुछ नहीं कर रही है इसलिए उसे प्रचार का सहारा लेना पड रहा है। विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि अति प्रचार से प्रचारित विषय की प्राथमिकताएं बदल जाती हैं। यह किसी को बताने की जरूरत नहीं कि लोकतंत्र में सबसे पहली प्राथमिकता नेता के जनता से जुड़ाव की होती है। यह जुड़ाव आभासी नहीं होता वह वास्तविक और व्यक्तिगत होता है। यह जुड़ाव नेता के लोगों से सीधे और लगातार संपर्क से होता है। राजनीतिक दलों के ज़मीनी कार्यकर्ताओं का ज़मीनी तंत्र इसमें उत्प्रेरक होता है। लेकिन मौजूदा दौर की विडंबना यह है कि आभासी प्रचार से अभिभूत शीर्ष राजनेता ऐसा मान बैठते हैं कि ट्वीटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफ़ॉर्म के जरिए आम जनता से उनका सतत जुड़ाव बना हुआ है, भले ही अपने ये हैंडल वे खुद न चलाते हों और इन्हें चलाने का जिम्मा जनसंचार का व्यवसाय करने वालों को सौंप रखा हो। उन्हें लगता है कि चुनावों में बाकी का काम उनकी जाति और धर्म आधारित भावनाओं से सनी राजनीति से हो जाएगा। अपने जाति समीकरणों को साधते हुए उन्हें ज़मीनी राजनीतिक कार्यकर्ताओं की कभी-कभी तारीफ कर उन्हें बहलाये रखने का इंतजाम जरूर करना पड़ता है। प्रचार विज्ञान में ओवर एक्सपोज़र और ओवर सैचुरेशन का पाठ भी पढ़ाया जाता, है मगर जी हजूरी वाले राज में अज्ञानी राजनेताओं को यह बताना कोई नहीं चाहता कि अति प्रचार की भीड़ में आप खो जाते हैं। एक समय के बाद लक्षित समूहों का ध्यान मीडिया प्रचार पर कम से कम होता चला जाता है। अति प्रचार से राजनेता अपने लक्षित समूहों द्वारा अनदेखा किए जाने का जोखिम उठाते हैं प्रचार में एक सीमा से ज्यादा जितना एक्सपोज़र होता है उतना ही दर्शक प्रस्तुत की जाने वाली चीज़ों को देखते-देखते ऊब जाते हैं। सरकारें तथा नेता अपने समर्थक और उनका भरोसा और वफ़ादारी भी खो देते हैं। जितना ज़्यादा लोग किसी चीज़ को देखते हैं, उनमें उनकी रुचि उतनी ही कम होती जाती है। इसकी भरपाई के लिए और ज़्यादा प्रचार की जरूरत महसूस होने लगती है ताकि लोगों की रुचि फिर से जगाई जा सके। यह एक दुष्चक्र है जिससे दर्शकों में फिर नई ऊब पैदा होती है। वास्तव में यह चक्र राज में बैठने वालों को बर्बाद कर रहा है। अति प्रचाररत नेताओं से लोग चिढ़ने भी लगते हैं। वफादार समर्थकों को तभी बनाए रखा जा सकता है जब उनसे सीधे-सीधे भौतिक धरातल पर वफादारी से ही संपर्क बना रहे। ऐसा संपर्क दुतरफा होता है। इससे नेता को भी ज़मीनी वाक़फ़ियत का पता चलता रहता है। आभासी इंफ्लुएन्सरों व प्रचारतंत्र के जरिए एकतरफा संवाद होता है। राजनेता को उनसे वापस कोई फीडबैक नहीं मिलता है। इंफ्लुएंसर तथा प्रचार एजेंसियां ठाकुर सुहाना फीडबैक ही देती है जिसके परिणाम चुनावों में बार-बार नज़र आते हैं।

सरकार का काम ज़मीन पर बोलना चाहिए। अति प्रचार से लोगों में अपेक्षाएं बढ़ती हैं जिसे पूरी करने के लिए शासन की मशीनरी को चुस्त-दुरस्त बनाने के लिए राजनेताओं में न तो रुचि है और न वैसी काबिलियत है। वे अपने-अपने टापुओं में मरजीदानों से घिरे मगन रहते हैं और अपने हितों पर केंद्रित रहते हैं जिससे उनका भौतिक वैभव पीढ़ियों तक बना रहे।

सरकार का काम ज़मीन पर बोलना चाहिए। अति प्रचार से लोगों में अपेक्षाएं बढ़ती हैं जिसे पूरी करने के लिए शासन की मशीनरी को चुस्त-दुरस्त बनाने के लिए राजनेताओं में न तो रुचि है और न वैसी काबिलियत है। वे अपने-अपने टापुओं में मरजीदानों से घिरे मगन रहते हैं और अपने हितों पर केंद्रित रहते हैं जिससे उनका भौतिक वैभव पीढ़ियों तक बना रहे। लोकतंत्र में प्रचार से हुआ अति एक्सपोज़र वास्तविक खतरा है जिसे कोई समझना नहीं चाहता। यही कारण है कि जनता अपने नेताओं तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं से तेजी से विमुख होती जा रही है। जब कहा जाता है कि लोकतंत्र कमजोर हो रहा है तो उसके पीछे आमजन का लोकतान्त्रिक संस्थाओं पर से भरोसा मिटना ही है। यह भरोसा जब टूटता है तो लोगों को अपनी सुरक्षा के लिए मजबूरन भ्रष्टाचार की शरण में जाना पड़ता है। यह बुरी व्यवस्था संस्थागत व्यवस्था के साथ खड़ी हो जाती है। यह स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि 'राज बदलग्यो म्हाने कांई' कहने वाले वास्तव में क्या चाहते हैं? उनकी क्या आशाएं, अपेक्षाएं और आकांक्षाएं क्या हैं? डिजिटल युग के पहले के संजीदा राजनेता इसे बखूबी समझते थे। हिंदुस्तान की आधी आबादी जिसके पास देश की केवल 10 प्रतिशत संपत्ति है, वह दस लाख से एक करोड़ रुपये दामों वाली महंगी कारें नहीं चाहती, वह अस्पतालों की 24 मंज़िली भव्य इमारतें नहीं चाहती, वह वह कुलीन सकूलें या सपने दिखाने वाले उच्च शिक्षा के संस्थान भी नहीं चाहती। वह देश की यह गरीब आबादी पेट भरने लायक काम चाहती है और युवाओं के लिए हाथ में कौशल देने वाली शिक्षा चाहती है। वह चाहती है चिकित्सा की सरकारी व्यवस्था में डॉक्टर तथा अन्य स्टाफ, उसके साथ सम्मान का बर्ताव करे, उसका ठीक से इलाज करने के लिए पूरे समय मौजूद मिले और उसे निजी मुनाफेखोर व्यवस्था के कीचड़ में न धकेले। वह सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का बेहतर माहौल चाहती है जहां गर्मी की छुट्टियाँ खुलने के पहले दिन से ही सभी शिक्षक मौजूद रह कर बच्चों को गुणवत्ता वाली पढ़ाई कराना शुरू करें, उच्च शिक्षा के संस्थानों, जिनमें तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी संस्थान शामिल हैं, में ठहरे पानी की सड़ांध की जगह नया निर्मल पानी आये और अकादमिक विषयों के साथ व्यावहारिक विषयों के अनुसंधान हों। युवाओं को केवल डिग्रियां नहीं वास्तविक कौशल वाली शिक्षा मिले। सभी स्वीकृत सरकारी पद भरे रहें। जहां-जहां आमजन का सरकारी व्यवस्था से वास्ता पड़ता है वहां उसकी लूट-खसोट न हो। जनता शासन से आकाश से तारे तोड़ कर लाने की अपेक्षाएं नहीं रखती है। जो शासन अपना मूल धर्म ही नहीं निभा सके वह किस काम का है? बढ़ती असमानता और लोगों की इस भावना को कि राज की व्यवस्था औसत व्यक्ति के विरुद्ध है, सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रचार करके कम नहीं किया जा सकता। उसे धरातल पर ही ठीक किया जा सकता है।

शासन तंत्र के ज़मीनी हालात, जहां आमजन भ्रष्टाचार की सीधी चोट खाता है, प्रचार के घटाटोप से नहीं छुपाये जा सकते। प्रत्येक भारतीय जीवन में एक बार अपना घर बनाने का सपना रखता है। क्या आज कोई यह कह सकता है कि राज्य के नगरीय निकायों में कहीं भी पंजीयन का काम बिना पैसे दिये होता है? वहां भ्रष्टाचार की व्यवस्था संस्थागत रूप ले चुकी है। इसी प्रकार यातायात और निर्माण विभागों में कैसे हाल है, उसे उनके ऑफिसों के बाहर पसरी चाय की थड़ियों पर चाय पिलाने वाले तक जानते हैं। मशहूर शायर मज़रूह सुल्तानपुरी की ये पंक्तियां याद आती हैं: जाने ना जाने गुल ही न जाने, बाग तो सारा जाने है। सच तो यह है कि प्रचार जनता और शासन के बीच कड़ी नहीं बन सकता। जनता और राजनेताओं के बीच बढ़ती खाई लोगों में खीज पैदा कर रही है तथा आशा, उत्साह और बेहतर भविष्य के लिये राज व्यवस्था पर लोगों का विश्वास डिगता चला जा रहा है। लोग क्या चाहते है? वे सिर्फ कानून का राज चाहते हैं। कानून के राज मतलब संविधान के अनुरूप राज्य। सबके लिये बराबरी का राज्य। संविधान के अनुरूप राज्य की व्यवस्था करना निर्वाचित सरकार का कर्तव्य है। संविधान का एक खंभा, कार्यपालिका, जिसका काम सबके साथ समता और न्याय का विधिसम्मत व्यवहार करना होता है वह अपने कर्तव्य से पूरी तरह च्युत है। उसमें लगे प्रमुख लोगों की राजनैतिक आकांक्षाएं भी अब परवान पर हैं जो उन्हें संवैधानिक दायित्व से च्युत करती है तथा पक्षपाती बनाती है। राज्य का निगरानी तंत्र बेशर्मी से भ्रष्टाचार की हद पार कर चुका है। कभी एक लोकोक्ति चलती थी कि निर्जला व्रत लिया हुआ कोई व्यक्ति यदि डुबकी लगा कर नदी के पेंदे में जाकर पानी पी आये तो भगवान शंकर को भी नहीं मालूम पड़ेगा। वहीं सर्वत्र हो रहा है। इसे धुआंधार प्रचार की ओढनी से छुपाया नहीं जा सकता। सब देख रहे हैं, मगर बदल कुछ नहीं रहा। इसीलिए यह कविता आज भी प्रासंगिक लगती है 'राज बदलग्यो म्हाने कांई।'

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कोई फर्क नहीं पड़ता है कि कोई हिन्दू है या मुसलमान

महावीर सिंह

आजकल चारों ओर जोरों से, भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले, बहुत से बन्धु धर्म के नाम पर नथुने फुला-फुला कर उठा भाषणबाजी करते सुने जाते है। टीवी डिबेट्स में यह अक्सर देखा जा सकता है। हाथापाई और गालीगलौज छोड़ कर आप उन धार्मिक लोगों का एक-दूसरे के प्रति आक्रोश देखिए और जज कीजिए कि क्या वे वास्तव में धर्म का मर्म समझते है?? वे धर्म की अपनी ही समझ को ही, ब्रह्म सत्य मान कर, दूसरों पर थोंपने के प्रयास में लगे रहते है। विभिन्न धर्मों के नाम पर दुकानें चलाने वाले, कुछ तथाकथित सामाजिक संगठन-दल या यों कहें सेनाएं और पॉलिटिशियन्स ऐसा अधिक करते है।

सार्वजनिक जगहों पर, सबसे उठा ऐसे नासमझों की जमात होती है जिन्हें धर्म का कक्का भी नही मालूम होता है किन्तु उनकी आंख पर पट्टा बांध कर, विशेष रूप से गढ़े नारों पर नाचने और नारे लगाने के लिए व्हिसल बजा दी जाती है। रुकने के लिए,जान बूझ कर, व्हिसल बजाई ही नही जाती। नासमझ कूदते रहते है। धर्म के प्रति निष्ठा अलग बात है किंतु अंध निष्ठा केवल बौद्धिक दिवालियापन है। पाठक दिल पर हाथ रख कर स्वयं उत्तर खोजें कि किस धर्म में धर्म के नाम पर मनसा, वाचा, कर्मणा हिंसा का उपदेश दिया है? सबमें ऐसे आचरण की वर्जना है।

जरा विचार करें--जन्म के समय बच्चे का धर्म क्या? कोई नही। केवल उसके माता-पिता का धर्म ही परिवार व समाज बच्चे का धर्म मानता है। माता-पिता भिन्न धर्मों के हों तो क्या? बच्चे का धर्म मा का या पिता का मान लिया जाता है। यदि समाज ज्यादा प्रभावी हो तो उनके द्वारा थोपा हुआ धर्म बच्चे का धर्म मान लिया जाता है। जिस रोज बच्चा स्वयं निर्णय लेने योग्य हो जाएगा तब वह मा का या पिता का या अन्य कोई या फिर कोई नहीं धर्म अपना सकता है। हाथ रखें दिल पर और उत्तर ढूंढें कि यह काम ईश्वर-खुदा-गॉड करता है? नहीं। किसी भी व्यक्ति का धर्म ईश्वर तय नहीं करता।

धर्म के नाम पर, किसी भी प्रकार की नफरत हिंसा करने के लिए सिखाए-पढ़ाए, अंधनिष्ठा वाले सामान्य लोगों की बात तो छोड़िए, अभी कुछ दिन पूर्व ही, दो सन्त पुरुष (यदि है तो) एक-दूसरे पर शब्द वाणों की बौछार कर रहे थे (आजकल तथाकथित संतों के बीच ऐसा युद्ध सामान्य से है!!!)--मुद्दा था राधा जी की जन्मस्थली बरसाना या कोई और जगह?? किस के पास 100 प्रतिशत पुख्ता प्रमाण है कि वे कहां पैदा हुई-- और यह कैसे महत्वपूर्ण है? महत्वपूर्ण तो राधा का संदेश है--कृष्ण अर्थात ईश्वर के प्रति राधा और समस्त बृज बालाओं का निश्छल,.गैरसंसारिक प्रेम। वो दोनों सन्त पुरुष जिस ढंग से एक-दूसरे के प्रति गुस्सा उगल रहे थे, लगता नहीं उनको राधा के निश्छल प्रेम की समझ भी होगी। ठीक है, कथावाचन से उनको धन प्राप्ति होती है। उनका व दूसरे अधिकांश ऐसे दूसरे लोगों का भी धर्म (जिसे वे अध्यात्म ज्ञान कहते है) अर्थार्जन तक ही होगा। 5,10 साल से ऐसे बहुत से ऐसे विख्यात-कुख्यात लोगों के नाम तो आम आदमी की जबान पर है। थोड़े-थोड़े अंतराल पर यह सूची बढ़ती ही रहती है।

किस धर्म में कहा गया है कि कोई पशु इतना पूजनीय है कि उसके नाम पर मानव हत्या कर दें? क्या किसी धर्म की पुस्तक में लिखा है कि कथावाचन या सत्संग में या मंदिर या मस्जिद में या धार्मिक तकरीरों, जुलूसों - के बारे में कोई व्यक्ति कोई प्रश्न पूछ ले तो उसे तिरस्कृत-अपमानित किया जाए या उसके साथ मारपीट की जाए? किस धर्म में जातीय आधार पर भेदभाव, अस्पर्शयता करने की सीख है?

क्या किसी धर्म में, वयं भगवान नें किन्ही विशेष व्यक्तियों, संगठनों को नामजद किया है कि भगवान, देवता के बारे में केवल व केवल वही बोलने, प्रवचन देने, व्याख्या करने के लिए अधिकृत है? उनकी समझ से भिन्न समझ रखने वाले ईश्वर-खुदा के बन्दे नहीं है क्या? यह मानने में क्या हर्ज है कि ऐसे लोगों को भी अपनी राय रखने का अधिकार है।

क्या कोई धर्म ग्रन्थ स्वयं ईश्वर नें लिखा है? लिखा है तो वह कौन सी प्रिय भाषा थी जिसमें ईश्वर नें वह ग्रन्थ रचा? क्या वह भाषा हिब्रू थी, संस्कृत थी, . फारसी थी, लैटिन या फिर अन्य कोई भाषा?

जो इस लेखक के समझ में आया वह यह है कि अधिक से अधिक यह कहा जाता है कि ईश्वर नें विभिन्न धर्म ग्रन्थों में उल्लेखित उपदेशों में से कुछ स्वयं बोले है। लिखने वाला ईश्वर नहीं- वह ओर कोई है, जिसने उन उपदेशों को सुना और दूसरों को सुनाया। जैसा सुनने वाले नें समझा वैसा उसने उस भाषा में लिखा जो उसको को आती थी।

वस्तुतः आज अधिकांस सत्संग, कथावाचन व धर्म के व्यवसायियों को वास्तविक धर्म जो सकारात्मक आत्मोत्थान के लिए होता है, जिसे साधरण समझ की भाषा में आध्यात्म कहते है उसकी इन लोगों को कोई खास समझ नहीं होती। सन्त पुरुष कभी न तो जमात में चलते और न जमात लगते, न नुमाइश करते हैं। कहा भी है-----''सिंहो के लहणे नहीं, हंसो की न पांत, लालों की न बोरियां, साधु चले न जमात''

बहुत आदमी से कहते सुने जा सकते है कि धर्म का प्रचार-प्रसार करना संविधान प्रदत साधिकार है, कोई कैसे भी करे। बिल्कुल है किंतु धर्म को समझा भी जाना चाहिए। किसी दूसरे धर्म की नफरती आलोचना का तो मूल अधिकार नहीं है, न। किसी के आस्था स्थलों, आस्था के ग्रन्थों के साथ बेअदबी का अधिकार तो नहीं, न??

भारत के संविधान में एक धारा ओर है जिसको लेकर कभी भी किसी राजनीतिक मंच, संसद आदि व धार्मिक व सामाजिक संगठनों में बात नही होती-- धारा 51ँ।

यह धारा भारत के नगरिकों के लिए उल्लेखित मूल दायित्वों को बताती है।

इसकी एक उपधारा 51ँ(ए) है। इसके अनुसार वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना, मानवीय गुणों व किसी भी विषय-बात की पूरी जांच पड़ताल व सुधार का रास्ता1 अपनाना हर नागरिक का दायित्व है। कभी सुनी आपने इस पर कोई सार्वजनिक बहस या इसके लिए कोई राजकीय, नागरिक संगठनों के प्रयास???

कोई भी धर्म माने, किसी भी धर्म-देवता-पुस्तक में आस्था रखें किन्तु दूसरों को भी आपकी ही तरह ईश्वर के बन्दे समझें और उनको भी अपनी सोच, समझ, आस्था रखने दें। इंसानियत यही है जिससे समाज में प्रेम, भाईचारा कायम रहता है। हर, मोहल्ले, नुक्कड़ पर खुली अधिकांस धर्म व्यवसायियों की दुकानों व बड़े-बड़े मठाधीशों के पास ईश्वर से बात करने का कोई गुप्त राजमार्ग नहीं है।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों के मस्टरोलों में फर्जीवाड़ा करने का मामला सामने आया

मसूदा ग्राम पंचायत के मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों की डिमांड देखकर जनरेट किए गए मस्टरोल से जुड़ा हुआ है मामला

मसूदा, (निसं)। मसूदा पंचायत समिति की रामगढ़ ग्राम पंचायत में मनरेगा कार्य के मस्टरोलों में फर्जीवाड़ा कर सरकारी राशि गबन करने का मामला अभी ठंडा ही नहीं पड़ा कि मंगलवार को मसूदा ग्राम पंचायत के मनरेगा कार्य के 50 श्रमिकों के मस्टरोलों में फर्जीवाड़े करने का मामला सामने आ गया। मामले के तथ्यों के तह तक जाकर की गई जांच पड़ताल में यह बात सामने आई है।

कि सम्बन्धित मनरेगा कार्य के लिए श्रमिकों की आई डिमांड के आधार पर मसूदा ग्राम पंचायत के रोजगार सहायक राकेश साहू ने अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए उक्त नरेगा कार्य के नाम से 50 श्रमिकों के मस्टरोल जनरेट करने हेतु पंचायत समिति को लिख दिया। उधर संबंधित कार्य के मस्टरोल जारी होने से पहले ही जनरेट हुए मस्टरोलों में मेट मुकेश काठात व सीमा देवी ने एनएमएमएस ऐप पर श्रमिकों की उपस्थिति अपलोड करनी शुरू कर दी। जबकि मौके पर किसी प्रकार का कोई कार्य किसी भी श्रमिक द्वारा नहीं किया जा रहा था।

इस मामले का खास पहलू यह है कि मामला मीडिया कर्मियों की जानकारी में आने के बाद मामले को लेकर की गई जाँच पड़ताल के दौरान मामला मसूदा ग्राम पंचायत के संज्ञान में आने पर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच पुष्पकांत धूत व ग्राम विकास अधिकारी हेमराज दरोगा ने सम्बन्धित मस्टरोलों को पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाने के साथ ही पंचायत समिति के विकास अधिकारी को सम्बन्धित मेटों के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु भी लिख दिया।

- मेटों ने जनरेट मस्टरोलों में एनएमएमएस ऐप से श्रमिकों की गलत तरीके से उपस्थित अपलोड करना शुरू कर दिया
- मामला जानकारी में आने पर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच व ग्राम विकास अधिकारी ने मस्टरोलों को पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाया
- पंचायत समिति ने दोनों मेटों को ब्लैक लिस्टेड करने की कार्रवाई करते हुए मसूदा ग्राम पंचायत को निर्देशित किया

इस मामले को लेकर मसूदा ग्राम पंचायत सरपंच पुष्पकांत धूत व ग्राम विकास अधिकारी हेमराज दरोगा द्वारा मसूदा पंचायत समिति के विकास अधिकारी के नाम महात्मा गांधी नरेगा योजना में जारी मस्टरोलों को पुनः जमा करवाने हेतु लिखे पत्र में बताया कि बाबू के कुएं के पास नाडी खुदाई कार्य पर पखवाड़ा अवधि 5 जुलाई से 15 जुलाई के लिए 50 श्रमिकों की डिमांड देकर मस्टरोल जनरेट कर दिए गए परंतु मस्टरोलों के प्रिंट नहीं निकले तथा ना ही पंचायत समिति स्तर से मस्टरोल जारी किए गए। इसके बावजूद मेट मुकेश काठात व सीमा देवी ने गलत रुप से एनएमएमएस सिस्टम से श्रमिकों की गलत उपस्थित दर्ज कर दी गई।

इस मामले में की गई जांच पड़ताल में यह बिंदु भी सामने आया कि जिन फर्जी श्रमिकों की एमएमएन एस ऐप के द्वारा गलत तरीक़े से उपस्थिति अपलोड की गई उनमें जोधपुर में मजदूरी कर रहे श्रमिकों तक की फर्जी तरीके से उपस्थिति अपलोड करने की भी जानकारी सामने आई हैं।

बहरहाल इस मामले को लेकर मसूदा पंचायत के विकास अधिकारी ने संबंधित मेटों को ब्लैक लिस्टेड करने के लिए मसूदा ग्राम पंचायत को निर्देशित किया है।

श्रमिकों की डिमांड के आधार पर जनरेट किए गए मस्टरोलों में मेटों के द्वारा एमएमएस ऐप के द्वारा श्रमिकों की गलत तरीके से उपस्थिति अपलोड करने की जानकारी मिलने पर संबंधित मस्टरोलों को निकलवाकर पंचायत समिति कार्यालय में जमा करवाने के साथ ही संबंधित मेटों के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु पंचायत समिति के विकास अधिकारी को लिखा है।

पंचायत समिति स्तर से मिलने वाले आदेशों निर्देशों के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पांच करोड़ की लागत से तैयार पार्क की सड़क और चारदीवारी पहली बारिश में ही बही

लोगों ने ठेकेदार और नगर परिषद प्रशासन पर मिलीभगत एवं लापरवाही के आरोप लगाए

हिंडौन सिटी, (निसं)। हिंडौन शहर के सौंदर्य को चार चांद लगाने के लिए व लोगों के फुर्सत के पल को सुकून से गुजरने के लिए लगभग पांच करोड़ रुपए की लागत से तैयार किये गये पार्क की सड़क और चारदीवारी पहली बारिश में ही बह गई, जिससे घटिया निर्माण की पोल खुल गई। लोगों ने इसमें ठेकेदार और नगर परिषद प्रशासन पर मिलीभगत एवं लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

उल्लेखनीय है कि सरकार की योजना के अनुसार प्रत्येक शहर के सौंदर्य को विकसित करने के लिए और पार्क सेल्फी पॉइंट आदि विकसित

- हिंडौन सिटी शहर के सौंदर्य को चार चांद लगाने के लिए खर्च किए गए थे करोड़ों रुपए

करने के लिए प्रत्येक नगर निकाय को करोड़ों रुपए का बजट दिया गया था। जिसमें हिंडौन नगर परिषद में करौली रोड पर स्थित जल से तालाब के पेटे में ही एक पार्क विकसित कर दिया गया, जहां इस जगह को विकसित करने से पहले नगर परिषद की ओर से किए गए प्रचार-प्रसार से प्रभावित लोगों ने सरकार एवं नगर परिषद के कार्यों की काफी सराहना भी की।

लोगों का आरोप है कि नगर परिषद प्रशासन और संवेदक की मिली भगत से पूरे किए गए इस पार्क के विकसित होने के काम में भारी औपचारिकता और लापरवाही बढ़ती गई। नगर परिषद प्रचार प्रसार किया था कि यह शहर के सौंदर्य में चार चांद लगाएगा। जहां लोगों के लिए दर्शनीय स्थल, सेल्फी प्वाइंट तैयार किया। तालाब की रोड साइड पर आई लव हिण्डौन का रोशनी युक्त बोर्ड भी लगाया गया है, जहां सेल्फी प्वाइंट पर लोग शहर के नाम के साथ सेल्फी ले सकेंगे। जलसेन तालाब में सौंदर्यीकरण कार्य के तहत बीच में 100 मीटर व्यास ऊंचा आईलैण्ड बनाया है। पानी के बीच हरियाली और रोशनी से लकदक टापू नुमा आईलैण्ड पर लोगों को झील और जलीय किनारे के पर्यटक स्थल का एहसास होगा ऐसा लोगों ने सोचा था।

जलसेन को शहरी पर्यटक स्थल के रूम में वाटर पार्क के रूप में विकसित किया जा रहा है। पार्क में बनाई गई सड़क एवं चारदीवारी के निर्माण कार्य की पहले ही बारिश में पोल खुल गई है। सीसी सड़क के नीचे डाली गई मिट्टी जमीन के अंदर लगभग 5 से 6 फीट नीचे धंस गई है। सड़क पूरी तरह पोली खड़ी है, जिस पर आने जाने वाले लोगों के लिए कभी भी बड़ा खतरा हो सकता है। इसके अलावा इस तालाब में बनाई गई चारदीवारी जिसमें केवल मिट्टी पर पत्थरों को बिना कोई सीमेंट आदि के सहारे के रख दिया गया। अब ये बारिश में मिट्टी के तक जाने से पूरी तरह तहस नहस चुके हैं।

नगर परिषद के नेता प्रतिपक्ष दिनेश सैनी ने इस मामले में नगद प्रसाद प्रशासन और संवेदक पर पूरी तरह लापरवाही और मिलीभगत के आरोप लगाते हुए मामले की जांच करवाने की मांग की है।

राशिफल

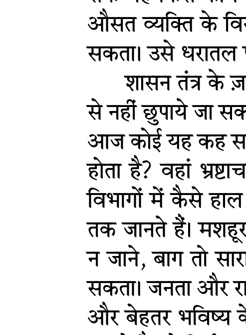

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 10 जुलाई, 2024

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, चतुरथी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र दिन 10:15 तक, व्यतिपात योग रात्रि 3:09 तक, विष्टि करण प्रातः 7:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मेष, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 10:15 तक है। कुमार योग प्रातः 7:52 से दिन 10:15 तक है। भद्रा प्रातः 7:52 तक रहेगी। शुक्र बाल्यव्य रात्रि 9:03 पर समाप्त होगा। आज व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:08 तक, शुभ 10:50 से 12:12 तक, चर 3:56 से 5:38 तक, लाभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:44, सूर्यास्त 7:20

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी और व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनाओं का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।